

पादपंकजप्रसन्नकामाभ्यामादयवकं॥ अननसिद्धान्तमनिप्रभाध
कं नमामिवाष्टाष्टकथागिनीगर्भं॥ १॥ यागिणीवकुमध्यसुंमारु
मक्षुलवद्वितं॥ नमामिगिनसानाथरेनवंरेनवीप्रियं॥ २॥ आप
दादूनिगात्रागतसमयाचानलंघनान्॥ सर्वाश्चमव्यपाहनुदि
व्यवव्रसमेतं॥ ३॥ संपूजकानां सामान्यतत्त्वस्वपाधकानां
॥ दक्षस्यनाष्टस्य पूनस्यनाष्टकं॥ गुरुणा किंरगवान्कूलैः॥ या

सामान्यगुरुणा॥ सत्स्थितंगुवनप्रयं॥ समस्तस्थानमस्तार्या
यागिनीस्थानिनकने॥ ४॥ नन्दन्तुसाधककूलान्यनिमादिसि
द्धिः॥ आपाः पतंगुसमयद्विषियागिनौ॥ साक्षात्विस्फूर्नसि
कापिसमाप्यवच्छेयस्यांगुनाश्चनक्षपंकजमवसर्वं॥ ५॥
अदिव्यकुमद्विषिकाः समर्थिनामावष्टाकाः॥ गुरुनाष्टदृष्ट
नः॥ कूलयागिनां जनमनसापाः॥ कूलद्विषिः॥ वीनद्वयवि

निन्दकाकुलवधूवैरासकाः पूनैडाहाधिनविपः पूनक्तुगठूमच
श्रीगिशीमधुला॥१॥ हनस्वावदूकाः सवदृगगक्षः प्रताः पिडा
वाग्रहावेगालोनगयद्वयपितनः दृष्टाधिपानाकसाः॥२॥
तुलावगताध्वयधियः प्रायेमहामनुजैकपाथानुसदा
स्वधर्पितप्रयामांसासवान्नादिरिः॥३॥ स्वर्गजवाम्निनसा
नलेजलनिक्षेपवक्रिदिदृष्टिताः सुद्वारः सुलगाध्वर

पी॥१॥ उनिताः स्वद्वयजामनुजाः॥४॥ यागस्त्रासहजाध्वयुजनिताः
कीलिकामनुजायागिन्यपललालासवान्नमूदिरासाः सर्वदाः
पानुवः॥५॥ दानस्त्राः सहगदनादिनिललयाः श्रीनन्दनकान
मधून्यागानविहायकन्दनमथानामस्मरानिस्थिताः॥६॥ कूपस्त्रा
नगगाध्वरुः पथगताः संदाहसंस्त्राध्वयपक्वान्नादनहर्तुमांस
कूमंगहर्तुगुणानुनः॥७॥ सक्तसक्तुनिनंगनंसूदतिनाविध्व

[illegible]

॥ ५५ ॥
ना
सं
तंगी
मा
द
प्रग

१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ प्रथमं गीतार्चनं लिख्यते ॥ ॥ सर्वमंगि
 सङ्गीतं ॥ यजमाननाचम्य ॥ चन्दनादिः छिनत्ति हवनं ॥ सूर्यार्च्यं ॥ अथादिवाक् ॥ ॐ क्राँ क्रीँ सः महामातृर्क्षुर्नवायप्रः
 काक्षक्षकि सहिताय ॥ दमर्च्यं गृहोक्षस्वाहा ॥ ॥ ॐ ३ अर्चि
 ति ॥ ॐ ३ कुलमातृर्क्षुर्नवायपूषं ॥ धूपं ॥ ॥ पूषण्यजनं सु
 ॥ ॥ ॐ ३ प्राक्षप्रतातृणं पुजदक्षकयूतापंचवक्त्रां गिनतां वं
 क्रयं धिं विरुध्य प्रकरातनमरथा हत्सत्रां कुलयनीं ॥ ॥ ॐ नमः

महि २

मिन्दुशुग्राममृतमयतनं विष्णुसर्जकविनां नो मिथी सिद्धिल
 क्षीमतारुलदां सुल्लवृपं विधत्ते ॥ नमस्तु देवदेवसि सिद्धिल
 क्षीनमास्तुते ॥ प्रत्यक्षिनामहादेवी नो जनाउद्धवनी नमा
 स्तुते ॥ सिद्धिनस्तु क्रियानस्तुति ॥ वाक् ॥ यजमानायति ॥ पूष
 णजनं नमस्कृत्य ॥ ॥ गंगागुणपूजा ॥ पूषण्यजनं समर्पयामि
 नमः ॥ गुणद्वयाभिस्तु नंगत्वा ॥ हस्तप्रक्षालनं विधाय ॥ ॐ

लक्ष्मधनं॥ चन्द्रनाक्षत्रनिधाय॥ नमः॥ मत्स्यमूडनाकाय॥
ॐ गं॥ दकं दू॥ रुद्र॥ ३॥ वै॥ धनमूडा॥ तालत्रयदिग्वन्धनं॥
प्रितस्वनाचमनं॥ जै॥ की॥ ह्री॥ खूं॥ का॥ ज्ञा॥ त्म॥ तत्वा॥ यस्वा॥ हा॥ जै॥ ३॥ खूं॥
की॥ विशा॥ तत्वा॥ यस्वा॥ हा॥ जै॥ ३॥ खूं॥ दूं॥ णि॥ व॥ तत्वा॥ यस्वा॥ हा॥ ॥ ३॥
गता॥ सामा॥ र्घ॥ पा॥ य॥ पू॥ जा॥ जै॥ ३॥ की॥ ओ॥ धन॥ ण॥ कृ॥ दि॥ था॥ नमः॥ ॥ रु॥
द्र॥ म॥ भु॥ ण॥ मं॥ चि॥ नं॥ अ॥ र्घ्या॥ नं॥ सि॥ ल॥ नमः॥ ध॥ कं॥ ले॥ ख॥ त॥ जै॥ ध॥ कं॥

चन्द्रनाक्षत्रपूष्यं नमः॥ जै॥ का॥ गं॥ रा॥ च॥ य॥ मू॥ न॥ च॥ वै॥ ॥ गा॥ ज॥ व॥ नी॥ स॥ न॥
स्व॥ ती॥ न॥ र्म॥ दा॥ सि॥ धू॥ वा॥ वि॥ नि॥ उ॥ ल॥ सि॥ स॥ नि॥ धी॥ र॥ व॥ ॥ अ॥ रु॥ ण॥ मू॥
द्रा॥ ण॥ का॥ य॥ ॥ ॥ की॥ १०॥ ॥ ध॥ नं॥ म॥ त्म॥ मू॥ डा॥ न॥ ॥ दू॥ न॥ अ॥ व॥ गुं॥ नं॥ वै॥
ध॥ न॥ मू॥ डा॥ सः॥ था॥ नि॥ मू॥ डा॥ ॥ रु॥ दू॥ ताल॥ त्रय॥ दि॥ ग्व॥ न्ध॥ नं॥ ॥ अ॥ र्घ्य॥ उ॥
ल॥ न॥ दाना॥ दि॥ पू॥ जा॥ रा॥ ण॥ द॥ वां॥ प्रा॥ द॥ य॥ ॥ गा॥ य॥ त्री॥ जै॥ ३॥ खूं॥ सि॥ धि॥ ल॥
की॥ वि॥ द्म॥ ह॥ का॥ लि॥ का॥ र्थ॥ धी॥ म॥ हि॥ ग॥ न्न॥ सं॥ क॥ र्पः॥ प्र॥ वा॥ द॥ या॥ त॥ ॥
त॥ भा॥ व॥ हि॥ द्वा॥ न॥ प्रा॥ द॥ य॥ ॥ जै॥ ३॥ पं॥ प्र॥ ति॥ ष्ठ॥ य॥ व॥ ता॥ दि॥ था॥ नमः॥ जै॥ ३॥ द॥

नदवतादित्यानमः॥ ॥ततः सूर्यार्च्यं॥ अथादिवाक्॥ नैऋतीं
ह्रीं क्रौं कीं सः महामार्गं धुर्ये नवाय प्रकाशं किर्युकाय ग्रह
नाष्टिगिथिथागनक्षत्रकनक्षमूर्ध्वान्नसहिताय सपनि
वानाय सायुधाय स्वाहनाय पुष्याय नमः स्वाहा॥ ऐं क्रौं कीं
सः महामार्गं धुर्ये नवाय स किर्युकाय नमः॥ ऐं ३ नवग्रहस्था
नमः॥ ऐं क्रौं कीं आदिवादिथ्यानमः॥ पूष्यं नमः॥ **जाप॥** विंशतिं

विं॥ १०॥ **स्तोत्रं॥** कलिकलखट्वाकान्तं धुमार्गं धुरीभाः हसख
रुलकुलालीकान्तो र्वार्थदाता॥ तद्वनतनूनां स्वार्चनं गार्ह
स्तः कसमकुलरुलाथैस्त्वाकुलार्कनमामि॥ आशिषकल्पनाया
धिधनसंहानचक्रनं॥ महाक्षकिधनं वीनं वन्द्यं रक्षादिवाक
नं॥ नमस्तुते॥ ॥ततोऽब्रामनस्तोत्रं॥ धवः अमनयातलेसः अर्च
कुलनाप्रोक्तः रुदिति मनुष्यः॥ तत्कुलमस्तु प्रिकानं विलिख्य॥
चन्दनामृतपूष्यं निधाय पूजयत्॥ ऐं ३ आधानं रक्षादिथ्यानमः॥

॥ जै ३ उँ वक्ररक्षवास्तुपूषायनमः ॥ जै ३ लौं ०० द्यायसूनाधिपगथजैनाव
तासनायवक्रहस्तायडाकियूकायसांगायसपनिबानायनमः ॥ जै ३ नां
अनयमजाधिपगथमषासनाथगि ॥ जै ३ मां यमायप्रताधिपगथ
महिषासनायदशुहस्तायति ॥ जै ३ कौं नैऋतयनकाधिपगथन
नासनायति ॥ जै ३ वां वनूक्षायकुलाधिपगथमकनासनायषासहसा
थति ॥ जै ३ यां वायवप्राक्षधिपगथहनिक्षसनायजं वृसहसायति

॥ जै ३ सूँ कवनायधनाधिपगथजुष्ववारुनायगजहस्तायति ॥ जै ३ हां
०० क्षनायविद्याधिपगथवृषावृणायद्विभूलहस्तायति ॥ जै ३ अँ जू
नकायनागाधिपगथवृर्मासनायवक्रहस्तायति ॥ जै ३ उँ वक्ररक्ष
लोकाधिपगथहंसासनायकमलहस्तायति ॥ ॥ पूनः पूजा ॥ जै ३ ओं
असितांगरेनवायकीं वक्राक्षिसहिगायत्रीपापू ॥ जै ३ कौं नूः कीं मा
हति ॥ जै ३ वां वषुः कीं कोमानी ॥ जै ३ गां कारः कीं वैष्णवी ॥ जै ३ टां उत्तम
०० कीं वानाहि ॥ जै ३ पां कपाली कीं ०० द्यायनी ॥ जै ३ यां रीषक्षकीं चो

मः॥ नै३॥ संहानः श्रीमहालक्ष्मी॥ नै३॥ कमगक्षपतिनाथस्त्व
ल्लरायकायनमः॥ नै३॥ कमवदकानाथस्त्वल्लरासहितायन
मः॥ नै३॥ श्रीॐ कामरूपी॥ यनमः॥ नै३॥ ददसंकटार्थेनमः॥ नै३॥
सर्वसंहानिरक्षेपनमः॥ नै३॥ महाकनवीनश्मशानायनमः॥ नै३॥
सकलसंहानमहावलीत्वाटकालासनद्वयपालायनमः॥ ॥
पूतः पूर्वादिद्यानयुगं॥ नै३॥ नन्दिननमः॥ नै३॥ महाकालायन

नः॥ नै३॥ रश्मिननमः॥ नै३॥ महाकालायनमः॥ दक्षिण॥ नै३॥ वृषायन
मः॥ नै३॥ स्वेदायनमः॥ पश्चिमा॥ नै३॥ श्रुथेनमः॥ नै३॥ वक्षुथेनमः
॥ उग्र॥ नै३॥ खुं सुट् अऊवकुस्वाथेनमः॥ उग्र॥ नै३॥ खुं
सुट् आखवकुस्वाथेनमः॥ दक्षिण॥ गंगास्वसिनसि॥ नै३॥
गुनूथानमः॥ पनमगुनू पनापन पनमष्टी पनमाचार्य पूर्व
सिद्धि आदिसिद्धि॥ ॐ निगुनपूजा॥ ॥ तशागक्षगुनमूलनम

स्नान॥ गुनूयानमः॥ वामा॥ गंगारक्षायनमः॥ दक्षिणा॥ मूलं प्रण
 गिनार्थे पापू॥ म॥ रू॥ दिगि मनुष्या तालत्रय दिग्वन्धनं॥ हंसः
 ॥ ॐ तिष्ठन् दानादीन जीवपूजं वृक्षन॥ त्रिविधाय ॥ तता वामः
 कदरुटसकलकलवृक्षवर्षु निरावदधिरुवय ॥ ॥ पूनः
 ॥ नै३ गणपतयनमः॥ दक्षिण ॥ नै३ वंदकायनमः॥ वामयुक्त ॥
 नै३ दूर्गायनमः॥ दक्षिण ॥ नै३ कौटुपालायनमः॥ वामा ॥ नै३

श्रीं पं पनमात्मनमः॥ ददि॥ नै३ श्रीं पशुद्वैरुट॥ वनरक्षधनं
 कृत्वा॥ विघ्नान्मानक्षार्थमक्षयतालत्रयं कृत्वा॥ द्वां रू॥ दिगि दिग्व
 न्धनं कृत्वा॥ नै३ वीजनभूति प्राकानं जलन कृत्वा दीर्घदादरक्षान
 प्रलवनमूलाधमादानयवृक्षनपर्यन्तं नादी॥ रक्षधनं कृत्वा॥
 श्रीं श्रीं हंसः कृष्णलनीचालनेन सुखमनादीमार्गचालनम॥ रक्ष
 नजीवयेतन्त्रयं कृष्णभारग॥ यं र॥ खवनसादृकाय पापपून

पं० ॥ प्रथ० ॥ नै० १६ नै० पाठ ग० यः पाप एस्मै लभे ॥ नै० ८ उव नवा
यूगो उगः एस्मै पुष्पं यच्छेत् लभे ॥ वै० ८ उव नवा दूकायः लला
भं जू मृतं लं खट्वेष्टि १६ नपः ॥ उलामय एनपः ॥ लै० ८ नै० पाठ ग०
यावतः ॥ एलपः ॥ हं ८ खव नवा यूगो उगः स
नीन आकाश हसु पादादि क्षीन सुदुरलभ ॥ साहं हंसः धकं जी
वात्मा पन विव सत्वाह जीव क्षिप्त को कायाव नू र्वज्ज हय ॥ थ

॥ नीन नीमाल एलपः ॥ प्राक्ष प्रगिष्ठां कुर्यात् ॥ स्व हृदय स्पृ
क्षत् ॥ नै० ३ ओं क्रीं क्रीं यनं लं वैक्षं पं संहं सः पने मक्षिव स्पवा
घ्न नश्च दू १६ गृजि का घ्राक्ष प्राक्ष पाक्ष लू हा गत्य सूरवं विनंति
सुं गु स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ तगी मूल न्यासः ॥ ॐ अस्य श्री सिद्धिलक्ष्मी प्रत्य
क्षि नाम नु स्या ॥ वक्ष्मि ॥ ॐ नान दक्ष प्रथम नमः ॥ क्षि न सि ॥
ॐ गायत्री चन्दन नमः ॥ मुख ॥ ॐ प्रत्यंगिना सिद्धिलक्ष्मी देवताये

नमः ॥ हृदय ॥ ॐ ह्रीं वीर्ये नमः ॥ गुह्य ॥ ॐ ह्रीं कथनमः ॥ पादो ॥ स
र्व ॥ १ ॥ धर्मार्थकामादर्थ उपविनिथागः ॥ वध ॥ ॐ ह्रीं
अंगुष्ठायां नमः ॥ ह्रीं ह्रीं तर्जनीयां स्वाहा ॥ ॐ मध्यमायां वषट् ॥ ह्रीं अ
नामिकायां ह्रीं ॥ ह्रीं कनिष्ठायां वषट् ॥ नमः ॥ अमुत्र यत् ॥ ३ ॥ प्रव
हदयादि ॥ ॥ तन्मा मारुक्कान्मासः ॥ ॐ अस्वर्गी मारुक्कान्मासस्व
क्कात्रपि गयत्री चन्दः मारुक्कासनस्वगीदवताहलावी ॐ स्वर्गस्था

हाकिः ॥ अथ कवीलकां दहसुद्रार्थ उपविनिथागः ॥ हता ॥ ॐ
ब्रह्मात्रय नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ मयत्री चन्दसनमः ॥ उक्तायां ॥ ॐ
मारुक्कासनस्वगीदवताये नमः ॥ हृदि ॥ ॐ हलावी जायनमः ॥ गुह्य
ॐ स्वर्गस्थः ॥ ॐ ह्रीं कथनमः ॥ पादो ॥ ॐ अथ कवीलकाये नमः ॥ सर्वा
॥ १ ॥ दहसुद्रार्थ उपविनिथागः ॥ हता ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ अथ कवीलकाये नमः ॥ अजं
गुष्ठायां नमः ॥ ॐ ह्रीं व ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीयां स्वाहा ॥ ॐ उं ह्रीं उं मध्यमायां

जिह्वायां॥ॐ जूः नमः॥ मू० ॥ॐ कैं नमः॥ ददस्व० ॥ॐ खैं
नमः॥ ददकूर्पभा॥ॐ गैं नमः॥ ददमनिव० ॥ॐ घैं नमः॥ ददंगु
प्रो॥ॐ ङैं नमः॥ ददगुल्फगु॥ॐ वैं नमः॥ वामस्व० ॥ॐ छैं नमः॥
वा० कूर्पभा॥ॐ ऊं नमः॥ वाममनिव० ॥ॐ मैं नमः॥ वामअंगु
लीमूल॥ॐ ञं नमः॥ वामनखाग्रे॥ॐ टं नमः॥ ददकैर्यां॥ॐ
णं नमः॥ ददजानू॥ॐ उं नमः॥ ददगुल्फ॥ॐ दं नमः॥ ददपादा

गुलिमूल॥ॐ ढं नमः॥ ददपादनखाग्रे॥ॐ तं नमः॥ वामक
र्यां॥ॐ थं नमः॥ वामजानू॥ॐ दं नमः॥ वामगुल्फ॥ॐ धं नमः॥
वामपादांगुलिमूल॥ॐ नं नमः॥ वामपादनखाग्रे॥ॐ पं नमः॥
ददपा० ॥ॐ रं नमः॥ वामपा० ॥ॐ वं नमः॥ कुलधू॥ॐ हं
नमः॥ ना० ॥ॐ मं नमः॥ ऊ० ॥ॐ यं नमः॥ कं ॥ॐ नं नमः॥ ददका
॥ॐ णं नमः॥ ददददयाहस्तानखाग्रान्कं॥ॐ षं नमः॥ वामह
॥ॐ लं नमः॥ ववृनि॥ॐ वं नमः॥ वामो० ॥॥ ११

सांगुलिनखाणांकं॥ॐ सैनमः॥ हृदयाददपादांगुल्यतं॥ॐ हं
नमः॥ वामहृदयादामपादांकं॥ॐ लैनमः॥ हृदयान्नाख्यनं॥ॐ
हैनमः॥ हृदयात्सूखानं॥ॐ तिमातृका॥ ॥ॐ खसुप्रनथ
नेदु॥ ॥ गताप्रभुतीन्मासः॥ नैकीं श्रीं कुंक्षो कुंक्षो कालिकालि
क्रां महाकालिकीं मां सरणीनितरा ॐ कि ॐ नीहूनकहे
प्रमूर्खीदवीकीं मां मापठन्तु भववः श्री हृदयदूती कालिका

दवी श्री पादुकां॥ हृदय॥ नैकीं श्रीं कुंक्षो नैनमारगवतीदूर
चाक्षुलिनीं गृह्णन्निधिनमां सरर ॐ नीकपालखदाक्षिनि
श्री हनरदहरवमरपचर हूं ३ अमकं मानय रगसर जां कीं हूं
हूं रूट् स्वाहा॥ श्री दूरवालीनी गिनमूनि श्री पाद॥ जै ॐ जां अथा
न जां ध्यानं कुंधानरतन जां कीं सर्वतः सर्वसर्वं कुंधानमस्तु नृप
नृपक्षो गिरा ॐ स्थान श्री सिखा स्वच्छ श्री पाद ॐ ॥ सिखा॥

नैऽकीं उल्लालिया सिमदिया कीं सवपूह वियवरिया कीं दिलि
या सि. उलखिया कीं सर्वतवदुल्लिखिया श्रीरत्नलिका. कवसूत्रा चर
नशी पादुकां॥ कवचा नैऽङ्गुष्ठ कुटुम्बकं दंरुद्र कीं नक महानक
चामूखुधनी नैऽहं स्वाहा॥ नक चामूखु नगुष्ठानशी पादुकां॥ नगु॥
नैऽङ्गु मूर्ति कीं कीं सर्वो पदवान् यन्मनुचूर्णप्रयागादिकं य
नकनं २० २० कानि नक विष्णुगितान् सर्वान् हन २५ दंष्ट्रा कनाली कीं

कीं दंष्ट्रा दंष्ट्रा गुच्छकुटुम्बक अमुदूरी गुच्छकुटुम्बिका श्री पादुकां॥
अमु॥ ॥ गता षष्ठा किन्पासः॥ नैऽकीं श्रीं कुक्षी जैजै नैऽङ्गु जकि
नी मां नदर ममत्वग्धतुं नदर सर्वसत्त्वव संकनी श्रीं श्री पादु
कां॥ श्री वायां॥ नैऽनां नी नैऽमां ना किनी मां नदर ममनकध तं न
दर सर्वसत्त्वव संकनी श्रीं श्री पादुकां॥ हदि॥ नैऽलां लीं लूँ लूँ
ला किनी मां नदर मममां स धातुं नदर सर्वसत्त्वव संकनी श्रीं

शीपादुकां॥नालो॥नें॥कांकिंक्वांयाकिंमानकमेममदाधतु
नरुसर्वसत्ववसंकनीशीपादु वु कां॥लि॥नें॥सांसिंमूं
साकिनीमानदरममअष्टिधातुनदरसर्वसत्ववसंकनीशीपादु
दुकां॥गु॥नें॥हांहीदूंसांहाकिनीमानदरमममऊनदरसर्व
सत्ववसंकनीशीपादु वु कां॥क्रम॥नें॥यांयीयूंयांयाकि
नीमानदरममगुवधातु नदरसर्वसत्ववसंकनीशीपादु॥

सहस्रदल॥वृक्षन॥००निप्रभुकिनी॥॥तगाइधमातुकांन्वासः
॥नें॥कींशीकुंकोअंअप्रयागदुक्तकंनूरैतंअंअकाभीअम्वाशी
पादुकां॥शी॥लि॥नें॥वानाधसीदुक्तकंनूरैतंवकांमाहध्वनी
अम्वाशीपादुकां॥वदना॥नें॥कोलागिनिदुक्तकंनूरैतंवकां
कोमानीअम्वाशीपादुकां॥क॥नें॥अदहासदुक्तकंनूरैतंव
तांनानायहीअम्वाशीपादुकां॥ददय॥नें॥अयंतीदुक्तकंनूरैतंव

करे नवरां वानाही अस्वाष्टी पादुकां ॥ नारो ॥ नुं ५ च निवृत्त पं क
पाली रे नवपां ठा काही अस्वा पादुकां ॥ स्वाधि सुभा ॥ नुं ५ व का श्रु क
रुत यं रीष स रे नवयां चा सु सु अस्वाष्टी पादुकां ॥ आधा ॥ नुं ५ धवी
कोठ रुतु ठां महा रे नवठां महा ल की अस्वाष्टी पादुकां ॥ पादुकाः ॥ १०
गुष्ट मातृ कान्या मः ॥ ॥ २५ ॥ निवृत्त सिन सुत्वा ॥ आत्म मूल देवा
नृपतः ॥ वृत्त रावः ॥ धूम्र नः ॥ विष्णु रावः ॥ पभल नृप रावः ॥ पनिक लपय

न ॥ १० ॥ आत्मना मूर्ति नृपाय गस्यापनमानं च मात्मानं पून क धानीय
॥ जवन सादु काय ॥ कुरु कन हटि निथाय ॥ निपां ठ ग याव ॥ ॥ १० ॥ रव
सुपन थन न्दू ॥ ॥ नभा मूल न्यासः ॥ ॐ अस्य श्री सिद्धि लक्ष्मी पंचाद
नी मनु स्या भव धा जलिः ॥ प्रजापति ऋषयः ॥ सिन सी ॥ ॐ अनृष्ट क
न्य सनमः ॥ मूर्खा ॥ ॐ श्री सिद्धि लक्ष्मी देवता येनमः ॥ हदि ॥ ॐ श्री वी
आर्येनमः ॥ गुह्य ॥ ॐ स्वाहा भव कथनमः ॥ पादो ॥ ॐ शुक्ल कील काय नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं नमः कनकसुलाय रुद्र ॥ ॐ नमः ॥ ॐ ॥
 वृक्षनन्त्रा ॥ श्रीं वक्रमक्षुला ॥ ह्रीं दक्षकक्षुला ॥ ह्रीं वामकक्षुला ॥ ह्रीं
 जिह्वासुला ॥ ह्रीं दक्षय ॥ क्लीं मय ॥ नमः ॥ गुह्यमक्षुला ॥ ॥ गता
 न्यासः ॥ खुं पनमहं सिनी दक्षपायनमः ॥ खुं निर्वाहमार्गदक्षिण
 सखाहा ॥ खुं विषमापप्रवप्रसमनीणि ॥ स्वार्थवषषट् ॥ खुं
 सकलद्वितीनिष्टकृष्णदलनी कवचाय ह्रीं ॥ खुं सर्वापदाभू
 धितनक्षी भूतगयाय वषट् ॥ खुं सकलकृष्णमथनी अम्नाय रु

टा ॥ ॥ खुं पनमहं सिनी अंगुल्यां नमः ॥ खुं निर्वाहमार्गदक्षिण
 स्वा ॥ खुं विषमापप्रवप्रसमनीमध्व मायां वषट् ॥ खुं सकलद्वि
 त्तिता निष्टकृष्णदलनी अनामिकायां ह्रीं ॥ खुं सर्वापदाभू
 धितनक्षी कनिष्यां वषट् ॥ खुं सकलकृष्णमथनी कनकसुलाय रु
 द्या अम्नाय रुद्र ॥ ॥ तत्ताव ॥ ॐ नमः सर्वसिद्धिमायिनीया
 पूर्ववक्राय नमः ॥ नमः सर्वसिद्धिमायिनीया दक्षिणवक्राय नमः ॥ नमो नि

॥ वाम ॥ छिन्दि २ ॥ खरुन विचिन्दि ॥ दक्ष ॥ गाउ य २ ॥ पाणी विचिन्दि ॥
वाम ॥ गावद्यावत्सकलमनानथं सोधय २ ॥ अर्यहसं विन्दि ॥ वाम ॥
पनमकाननिक ॥ वनहसं विचिन्दि ॥ दक्ष ॥ रगवतीमहारे नवनेपधनि
शी ॥ मूर्धु विचिन्दि ॥ वाम ॥ गिदहावननसिगसकलमनुभार ॥ चं ॥ नि
विन्दि ॥ दक्ष ॥ रूतिक्तायधन्यासः ॥ ॥ प्रक्षरऊनवत्सन ॥ शुक्लपुताधि
नृज ॥ ननं विचिन्दि ॥ दवीमहाकालिकालनासिनी ॥ कुशुलिनीशानिस्व
नूपं विचिन्दि ॥ मूलाधनध्यात्वा ॥ ॥ न्यासः ॥ हूं ॥ आधन ॥ हूं ॥ दक्ष

॥ हूं ॥ प्रम ॥ धात्वा नूपं विचिन्दि ॥ प्रसीदमदनारुनांकनूरसुनासन
कन्यकां ॥ प्रिलाक्यवसं विचिन्दि ॥ ह्रीं ॥ आधन ॥ श्रीं ॥ गुह ॥ हूं ॥ लि
॥ ॥ रुट् ॥ ना ॥ रुट् ॥ कं ॥ रुट् ॥ मुख ॥ स्वा ॥ प्रम ॥ हा ॥ व
नन ॥ रुट् ॥ ॥ ॐ ॥ असमालामनुस्य ॥ हताधुलिः ॥ ॐ ॥ बुक्ता
अपथनमः ॥ छिनसी ॥ ननरूपुन्दसनमः ॥ मुख ॥ श्रीं ॥ सिद्धिलक्ष्मी
प्रत्यक्षिनादवगाथनमः ॥ दक्ष ॥ हूं ॥ वीजायनमः ॥ गुह ॥ दक्ष ॥ क
थनमः ॥ पादो ॥ ह्रीं ॥ कीलकायनमः ॥ सर्वांग ॥ सर्वार्थसाधनऊपर

विनियोगः॥वधः॥अलिः॥ ॥ततीवर्षन्यासः॥ॐ॥**सुमरु**॥नमःसर्व
 सिद्धिआगिनीत्यानमः॥**कं॥**॥सर्वसिद्धिमातृ॥**इदि॥**॥नभानिस्था
 दितानन्यनन्दिताथे॥**नाथो॥**॥सकलकूलचक्रनायिकाथे॥**गुध॥**॥एग
 वतीचंजकापालिनी॥**गु॥**॥ॐ॥**वृक्षस्तुभ**॥**की॥**॥वामनगु॥**हो॥**॥वामक
रु॥॥**हो॥**॥**ददक**॥**हो॥**॥वामनासापूठ॥**को॥**॥**ददना**सापूठ॥**नं॥**॥व
कु॥॥**मं॥**॥**शिखायां॥**॥ॐ॥पनमहंसिनी॥**वृक्षन**॥॥निर्वीक्षमार्गद्वी॥
 नासा॥**गु॥**॥विषभापप्रवप्रसमनी॥**गालू॥**॥सकलदूनितानिष्टकृष्टद
 हं॥**ददन**गु॥४

लनी॥कपालोः॥सर्वापदाभ्राधिरनक्षी॥**क॥**॥सकलक्षगुप्रमथ
 नी॥**वृक्षस्तु**॥**द्वी**आगकु॥**इदय**॥**हस॥**॥**नाथो॥**॥वर्जवर्ग॥**ह**
दय॥नननूधिनान्तव॥**एदही॥**॥**क॥**॥ममस्वसकुंमदमर्द॥**सुमरु**
 ॥**स्वाहि॥**॥**स्वाधिस्तुभ**॥**शिखूलनरिंदि॥**॥ॐ॥**घथाः॥**॥**किन्धि॥**॥**गुध॥**
खरनगजय॥**पादथाः॥**॥**कुदय॥**॥**पादांगुष्ठथाः॥**॥तावथावत्सक
 लमना॥**नथात्माधय॥**॥**पादथाः॥**॥पनमकानूधिक॥ॐ॥**घथाः॥**
एगवतीमहानववृषधनिक्षी॥**कथा॥**॥**शिद**वननमिग॥**गुध॥**॥१

सकलमनुमाग॥ नारो॥ पुनरुत्तमवत्सल॥ हृदि॥ यवी महाकालि॥
 कं॥ कालनासिनी॥ वक्रु॥ प्रसीदमनांतुनां वक्रु॥ १०॥ यथाः॥ सनास
 नकन्यकां॥ शिनसि॥ की॥ वक्रु॥ १॥ यवी॥ १॥ विन्दू॥ हं॥ वक्रु॥ रुद्र
 कं॥ १॥ रुद्र॥ हृदि॥ रुद्र॥ नारो॥ ह्वा॥ लि॥ हा॥ गुरु॥ १॥ तिमा
 लामनुन्यासः॥ ॥ नवादननन्यासः॥ ॐ॥ ललाट॥ ह्रीं॥ नमः॥
 हूं॥ गं॥ ह्रीं॥ १॥ गुरु॥ हूं॥ वक्रु॥ १॥ वक्रु॥ कनागुलि॥ नमः॥

क्रौंच

प्राख्य॥००॥गिनवाहनं॥ ॥नताप्राक्षायाम॥कुं०॥१०॥पूजक॥कुं०
 ५०॥कुं०॥कुं०॥५०॥पूजक॥ ॥नताइकनयागः॥०॥स्वासाह
 दयद्यादद्याद
 दयकमलम
 नादि॥धूपदीपरुलनेवशाचमनीयंतपूजयदितिमानसीजा॥
 मूलनसिनसिप्रियाकुशलि३॥०॥निजूनर्यागः॥ ॥नतापूजासाग्री
 सर्व॥०॥धय॥सामान्नाद्यकुलनप्राद॥रुद॥०॥धनं॥यं३॥नं३

वं३॥सुसं३॥वं॥२धनमूद्रा॥२०६॥तालप्रयदिग्वन्धने॥धोषदा॥शो
 या॥चन्दनादिभा॥नमः॥॥तमाधंखसुपापने॥स्ववामःप्रिकोश
 मायांकीठभूविंवहृचतुनमात्मकंमशुलंनिर्मायेःप्रिकोशम
 २०६॥ने॥कानमापूर्य॥अमृतप्रकाशितमाधनेतवसंस्त्रापा॥पू
 जा॥ने॥३नंवक्रिमशुलायदहाकलात्मननमः॥२०६॥३संखंप्रख्या
 ल्या॥ने॥३खुं॥ततर्हंखसुपापा॥ने॥३हंसूर्यमशुलायदादहाक
 लात्मननमः॥ने॥कींहींकीं॥उदकेनापूर्य॥ने॥३कीं॥ग॥अ

वज्रमूनवेवरा॥जवनीसनस्वरी॥नर्मदसिन्धुकावनिउलसिमंनि
 धिकून२स्वाहा॥उलनपूर्य॥ने॥३संशाममशुलायदादहाकलात्मन
 नमः॥ने॥३कींवनूलादर्थीकीं॥मूलनवादनसंजप्य॥॥वं॥२धन
 मूद्रा॥सःथानिमूद्रांप्रदक्षमत्स्यमूद्रायासंक्राया॥ने॥३अमृतअ
 भाहवअमृतवर्षिणीअमृतंश्रावयसांहंअमृतध्वथनमः॥वं
 ६॥२धनमूद्रा॥अमृतमूद्रा॥लूँलूँलूँलूँलूँ॥ष७॥२जनपूजा॥ने॥वं
 दनादि॥हंखमूद्रा॥तालप्रयदिग्वन्धने॥तऊलनपू

जासा माघीः दवता दिक् स्वात्मा सिंचनं ॥ गायत्री मन्त्रः ॥ ॐ ३ खुं सिद्धि
 लक्ष्मी विद्मह नवराधिक धीमहि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ ॐ
 तिष्ठं स्वपूजा ॥ ॥ पोथार्थावमनीय हानकलशमधूपर्को निशामान्या
 ७४ धर्मावस्तरूपनं ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ ॐ चन्द्रनमः ॥ ॥ कीं जूटननमः ॥ ॥
 (ॐ खुं सिद्धननमः ॥ ॐ खुं पूष्यनमः ॥ ॥ स्वात्मसिनसिगुनपकि
 पूजा ॥ ॐ कीं शीं गुनस्थाने मः ॥ ३ पनमगुनः ॥ ३ पनापनगुनः ॥ ३ प
 नमः ॥ ३ आदिसिद्धिमहानन्दगुनः ॥ ॐ कीं शीं गुनपादकां पूज

यासिनमः ॥ मूलनसिनसिगुयां जलि ॥ ॐ ग्वात्मा पूजा ॥ ॥ सा
 मान्यार्धर्षस्वस्तिगुलनयव्यात्मनाम ॥ ॐ विन्ववृक्षपक्षा
 त्रिकां विनिस्वापूजयत ॥ ॐ कीं शीं सर्वमन्त्रासनायनमः ॥ ॐ ३ व्रं काम
 वृपीलयनमः ॥ ॐ ३ कीं पूष्यगिनिपीलयनमः ॥ ॐ ३ शीं जालंधनपी
 यनमः ॥ ॐ ३ उशानपीथायनमः ॥ ॐ मन्त्रलक्ष्मीनिनपायासनपिपा
 दिकाकूपय ॥ ॐ ३ खुं संकलशप्रमथनी अस्त्राय रुद्राथापलपमधुलसमी
 विष्णुलाव ॥ ॐ ३ खुं सिद्धिलक्ष्मीप्रमं गिनादवी अर्थाध्यासाधयामिनमः ॥
 नै

[illegible]

नीयामुमन्नुष्यप्रदात्म्या॥ नै३खुं सकलक्षत्रप्रमथनी॥ अमुनाय रुः
नै३खुं सिद्धिलक्ष्मीप्रदं गिना ॥ दवी अम्वा अर्धपात्रं ह्यपयामि
नमः॥ गिपात्रं ह्यपयामि॥ नदूपनिपूजय ॥ नै३खुं हौं हौं हौं हौं हः हौं
मौ वसुप्रददादक्षकलात्मनः सूर्यमधुला ॥ य अर्धपात्राय न
मः॥ नदूपनिदक्षिणावर्तना॥ नै३क्षीं क्षीं कं रं नपिनीकलाक्षी
पा प्र॥ नै३खुं वंशमनीकला॥ नै३तं रं कदिनीकला॥ नै३धं
वंतापिनीकला॥ नै३ठनं धीनीकला॥ नै३वंधं वाधिनीकला॥

नै३ कूँदं वनर्धकला॥ ३ ऊँथं आकर्षणीकला॥ नै३ अंरं समूनाकला॥
 नै३ हंमृष्टिकला॥ नै३ टं वं अष्टाकला॥ नै३ वं उं वनर्धकला॥ नव
 पूजयित्वा॥ घं मनादकनक्षं॥ पमंदलामनपटा॥ नै३ वामुष्णायन
 मः॥ आनन्दकलसंस्तुपयत॥ नै३ खुं उं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
 श्रीमहासिद्धिलक्ष्मीत्वमवप्रीतिपादुकासाधयामि॥ स्थापनं॥ उं ग
 रगतिमनु॥ कुरुधाममपलानं पश्चिमाभ्येष्टानं॥ नै३ यं अनं ग
 यनमः॥ नै३ नं कक्षुर्णायनमः॥ नै३ लं मदनायनमः॥ नै३ वं मीनकत

नायनमः॥ नै३ हं मन्मकतनायनमः॥ नै३ षं दर्पकायनमः॥ नै३ सं
 कामायनमः॥ नै३ हं प्रद्युम्नायनमः॥ चठापनि॥ नै३ क्रीं श्रीं क्रीं श्रीं
 आनन्दरेनवरेनथेनमः॥ नै३ खुं सकलहागुपमथनी
 अमुयखट्वा॥ धन्वामृतीकनक्षं॥ वं॥ ६॥ दिवन्धादिकं
 द्वा॥ हं सां हं ३ हं सां हं सां वरुणादवीहंसः॥ सफभा॥ नै३ खुं नमः॥ ६ वानं ज
 म॥ पूजय॥ नै३ नं वं हिमशुलायदहाकलात्मनमः॥ नै३ हं सूर्यम
 शुलायद्यादहाकलात्मनमः॥ नै३ सं सां ममशुलायधादहाकलात्म

नमः॥ ॥ध्यानं॥ समुद्रमथ्यमानगुः शीतलद्रोमागनात्मना। गनीत्यन्ना
सूनाद्वीकन्मकारूपधामिनी॥ अष्टादशभुजाद्वीधूर्ध्विगालाचने
यता॥ प्राफासूवर्धुवर्धुचक्षुद्वविपाशुला॥ १॥ मूर्तुदीनवर्धुचक्षु
पुवर्धुवनासुरा॥ त्रासयंत्पसूनानिर्पदवानामपिइन्द्रा॥ यासूनासाउ
नाद्वीथामशःसस्वयंशिवं॥ यागन्धसस्वयंवक्त्रायानसस्वउनार्धन
॥ ॥ ॥ क्राथामन्ना१थाद्वीजलम१धगुरुरेवः॥ रुनगंगाममाख्याता
चतुर्भुजासकसागताः॥ १॥ मूर्तुं१ंखवर्धुचक्षुं१ंखवर्धुमहीगला॥ ॥ ॥

वानां नृनाथं यदेतानां नासनाय व॥ अर्चनघटसूक्तं जायते इव ॥ १ ॥
 न॥ ०॥ ॥ अ० भू० स्वाहा ॥ द्वितीयं नावभाजनं ॥ ॥ जे० इ० वल्लवमूयनमः ॥
 अ० भू० आ० भू० नन्दरेव वायवो घटः ॥ वन्दनादि ॥ धनकूमूसखाद
 अ० भू० क० भू० गामथहावल्लवकायावपातुसलया ॥ मूलं धीपा
 अ० भू० गुं पूनं यामि ॥ जे० इ० वक्राक्षुखसुसंस्तमः ॥ घनसमावहः ॥
 आपूनिगं महापातपीयूषनसमावहः ॥ ॥ खु० खु० की० द्वितीयं निदिष्ट्य ॥
 अमृतमूदया० वं० इ० वि० धा० ला० श्रुं ॥ की० इ० न० दा० सं० सा० ध्वा ॥ ह्रीं० सं० दी०

प्यः ननु ॥ हृष्यपनामृगपदं नीत्वा ॥ मूलनवाक्षरं ॥ पूर्वपात्रं वि
 लाप्य ॥ त्रैलोक्यं सांसीं सृंसे सोमः ॥ कामप्रदपाठकलात्मनसा
 ममशुलाय अर्धमृगाय नमः ॥ ॥ गइपनि ॥ श्रीं श्रीं जमना कला
 श्रीपादकां ॥ श्रीं श्रीं आमानसी कला ॥ २०० नुष्टिकला ॥ २०० पूष्टि
 कला ॥ २०० प्रीतिकला ॥ २०० नवगी कला ॥ २०० श्री कला ॥ २०० श्री
 कला ॥ २०० जालिकला ॥ २०० सुध कला ॥ २०० शास्त्रा कला ॥ २०० हंमव
 गीत ॥ २०० श्री कला ॥ २०० संपूर्ण कला ॥ २०० अंवा मा कला ॥ २०० अं

मा कला ॥ त्रैलोक्यं सकलक्षणप्रमथनी दूंदू जमनाय रुद्र ॥ वतुर्द्विद्व
 क्कटिकंदत्वा मूलन अमृतमद्रया विलाश ॥ श्रीं श्रीं ग्लूंगगन
 नत्वाय नमः ॥ २०० स्वर्गनत्नयानमः ॥ २०० मर्त्यनत्नयानमः ॥ २
 पुं पातालनत्नयानमः ॥ २०० नागनत्नयानमः ॥ तत्सर्वं वार्त्तिक
 संकाशां वाग्वाहति कलां ध्यात्वा अमृतं ध्वनीचन्द्रमशुला
 श्रवन्निवामानामिकाया वामावर्त्तन प्रकाशं विलिख्य ॥ अं १६
 कै २५ यं १० ॥ क्रमन प्रिकानं विलिख्य ॐ हलं द्रु गं विलिख्य

अ ४ सिद्धिदात्री पुस्तकालिका
पुस्तकालिका

ASHA ARCHIVES ३२७७



वाञ्छमृतं वयं २ अमृतं दावय २ आपूनि तं महापातं महापापाम्
 नं कन २ गुरु २ दापं मं व २ शिवाय कः माहं हंसः स्वाहा मां मुनीं
 कृष्णं विभावय २ ॐ दं द्रव्यं पवित्रं कनूर २ जौं जीं दूं मुं कूं
 जीं कः शुक्लं पविभा विगाये कूं कूं कः वं वं वः स्वा २ २ हा
 ॥ जीं मुं अख २ सुकल ॥ न न्य कन वन सुधा तमनी ॥ स्वकृ न्य मुन द
 मनु नि २ अकल नूपिनी ॥ मां अन न्य रे न वा य वो षट् ॥ ॐ गो न
 २

न्य रे न व सुधा दवीं गदि न्य २ न व न पयि स्वा ॥ अकल न्या मुता का
 ना सिद्धि कान कन पन ॥ अमृत त्वं निधि अस्मि न्व सु नि द्धि न त
 पिधी ॥ पुन न्न वात्मा मिथुनं न य च्य ॥ मां मुनीं पापू ॥ मां अन
 न्य रे न वा य वो षट् ॥ मां सुधा द्यो कूं कूं वो षट् कूं ॥ न
 द्यो कल मं नि स्वा ॥ न कूं मा ग ग ज २ २ २ च पातु २ २ दवी
 विवि न्य तं व न पयि थ २ ॥ गल व द कं द ग वा क्का दि मूल

तर्पयन्तं स्व २ मनु ६ तर्पयन् ॥ ओं शिं रूं महामुष्टिचमूलक्षीसि
 हृद्वनीरूंरुट् ॥ ततस्तर्पनं ॥ पूनर्नवादनर्थानवधानर्पे ॥ ॐ
 तिमूलपात्रपूजा ॥ ॥ ततागुनूपात्रपर्यसिद्ध दिव्यमानवादि
 कंसंतर्प्य ॥ ॥ तदर्थपात्रंगुनूवनिवद्य ॥ ॥ अकिपात्रमूलपा
 त्रविन्दुग्रयंदत्वास्थापय ॥ वदकपात्रस्थापनं ॥ ॥ तताद
 व्यावाहनं ॥ कृतावलिस्तुंपरित्वापूनमालिनीपर ॥ ॥ मा

लहासनसूर्यार्घ्यादिपंचवलित्वंधूनकाव्रथाकिपूजा ॥ धनत्वं
 धूनकं ॥ देवावाहनप्रिवलिआदिननिर्यन्वानेमिरिकम्वासा ॥ क्षापा
 ॥ जनविभुद्रादिमूलस्थानानं पूजयित्वा गुचकालिपूजय ॥ दि
 ति ॥ ॥ ततामूलमुष्टिलार्चनं कानयता ॥ अथनवादनप्रहृष्टं गं
 विधायपी ॥ पूजां कानयता ॥ ॐ श्रीं श्रीं ओ धनं ठा कुं नमः ॥ ॐ श्रीं श्रीं
 भू नकाय नमः ॥ ॐ श्रीं श्रीं कूर्मय नमः ॥ ॐ ३ धन ॥ ॐ २ ॥ ॐ ३ वा ॥

मन्त्रायथीपापू॥ ईं बुद्धप्रतायपापू॥ त्रै ३ ईं विष्णुप्रतायथीपापू॥
त्रै ३ ईं नूडप्रतायपापू॥ त्रै ३ ईं रुद्रधनप्रतायथीपापू॥ त्रै ३ ईं सदा
शिवप्रतायथीपापू॥ ईं प्रतासनायपापू॥ त्रै ३ ईं श्रीं श्रीं महानूडास
नायथीपापू॥ त्रै ३ श्रीं सिद्धधनमहादेववरदानकथीपापू॥
तनुनवाहनधारी ० संपूजा॥ मालामनुधारी ० संपूजा॥ ॥ तथा उच्यते
पात्ररुद्रधनपूजापक्वकनधादिकं सिंच्य॥ नवाहनधारीपूजापक्वकनधा

दिकं चैतन्यरुद्रत्वा॥ पूषमकं गृह्णित्वाः नारायणकनककृपिकां च त्वा
॥ रुद्रबुधविंध्यत्वाः मूलाधनसंकोचः रुद्रयादवीं सहस्रदलसं
निवध्यः पनरुद्रसिद्धिबसंतीनं विलय्यः तथा दिंगलया नाक्षपुत्रव
त्पनाः मूलमात्रामनुधनन्॥ या निमूद्रया पनमेधनी शिरत्त्वस्वत
पां प्रनिवानयतां मधुलनिवधाय॥ त्रै ३ श्रीं या सा पननादवी ख
चनी ख रुद्रपिनी॥ सर्वरुद्रहिमसागः अहि नहि पनमेधनी॥ म

हानुडासनादवी. विजयगतिनिर्मल॥ सर्वद्वारहितामारा. नृक्षहि
पनमध्वनी॥ अस्मिन्महोत्सवानिध्वन्मन्त्रसन्ताएव॥ अस्ति
यवीमूर्तिर्वेगन्मकलामावाञ्छ. मूलविश्यासमनन॥ आवाहनस
निधन. सनिगाधन. सम्मुखीकनहादि. अवगुह्यन॥ १५ नृमूडा
वध्यादद्यागंरावय॥ गतासर्वज्ञादिषु ५ द्वांन्यस्त्वा॥
मनुदहं दद्यान्मस॥ गतानवाकनहासंधूपा॥ आशिं हौमहा

सृष्टिचतुलक्षीसिद्धध्वनीकुंरुट्॥ ॥ गतादद्यास्वतूपंध्यानं॥
ध्यायत्यनापनाध्वि. विष्वग्नामकलान्प्रठा॥ पृष्टिमापृनिगाञ्छ
याचनिगासात्वतामृता॥ सांत्वापनापनासाकाधून्यातीगानिनंऊ
नाः॥ महामतामयिलक्ष्मीलक्ष्मीकाप्रायभापमा॥ निर्मलानि
कलादवी. सकलास्तुलविग्रहा॥ पंचवक्त्रादष्टाशुजा॥ त्रिपंचन
क्षेत्र्यगा॥ १५ नृमहोत्सवमहादवी. महाप्रगापेनिष्ठिता॥ मातृकास्तु

कमधस्तुतिद्विधागिनिप्रजिता॥सोम्याग्रजपरावनसाधककु
समाहृता॥दानिताम्याललिहानाः॥कालाप्रहंकरंजग॥उच्छ
भाक्कसथारानः॥वालयत्तुलपर्वता॥कविद्वंसकवित्कूपः॥
वित्मंहनगप्रजाः॥कवित्कृत्तुवित्तात्तुस्वतन्त्रकृत्प्रवर्तन॥
॥ग॥॥साएन॥क्षेयूकाउनरगन्धविरुषिताः॥पामोक्षधनादवी
वनदाख्यपासिका॥सव्यहस्तधृगंखकं॥प्रेलाव्यहारकानकं॥

वामखद्वंजमत्तुगुंदद्विहृलमूक्तमं॥अपत्रकशुनंभोदंतेला
व्यद्वतआत्तिनं॥तथाभ्यसंस्तिनंमूर्धुसकर्ष॥॥नितात्तिनं॥
वामगुक्तलसंदिव्यंमहानृत्तः॥प्रपूनिनं॥प्रषाप्रत्तंगिनादवीउत्त
नाव्यामदहमा॥प्रकासान्धेदनविष्वव्याप्यव्यवस्तितां॥प्रत्तं
गिनामहाद्वीसिद्धिलक्ष्मीजयप्रदा॥॥ध्यानपूष्यंनमः॥प्रवर्त
नं॥रावतिं॥नूदस्त्वन्धधिवृक्षंमशुलवाचकप्रतिमायान्वासा

सः यानि मृदा रूढ दिवन्धनं ॥ मूलमालामनु दधित्वा पूजायुक्
 लिंदश्यात् ॥ ततारुन्मुखं गृहिचा गुनूपनंपनादिगक्षवदूका
 दिक्कृत्यागिनादि सागरगवस्यानं स्वस्वमनु दधतर्पय ॥ श्रीपाकां
 र्पयामिनमः निर्यनं ॥ मूलद्वीनु ॥ १२ ॥ नवाक्षरहा ॥ तताप्रथमं
 पाशं ॥ श्रीं श्रीं रगवरी श्रीप्रसंगिना सिद्धिलक्ष्मी भूस्वारे सांग
 ये सपनिवानाये सायुधायै नमः ॥ अथवा मूलेन श्री

१० पंचामृतं ॥ दग्धदधि घृतं तव्यं सर्कनामधू संयुतं ॥ स्नापय द्विधिना दवी ॥ नृत्तु विव
 प्रसंगिना सिद्धिलक्ष्मी देव्यै नमः ॥ ततारुचं ॥ ततारुचं ॥
 श्रीं श्रीं रगवरीदि मनु दध ॥ नृदमर्धनमः ॥ ततारुचमनं ॥ श्रीं श्रीं
 रगवरीदि मनु ॥ नृदमाचमनीयं नमः ॥ ततदीनस्नानं ॥
 श्रीं श्रीं दीनस्नानाप्रय रूक्मा देवशी रक् वत्सना पुक्का तु मेदि
 नीं पश्चादि नृत्तु लोकमहीयत ॥ दधिस्नानं ॥ स्नापय द्विधिना
 दवीं दधारे नव नृत्तु ॥ नाऊतन विमान नृत्तु लोकमहीयता

पुनाप्रय ॥ १०

क्रीं श्रीं रंगदण्डादिः ॐ द्यधिस्तानं नमः ॥ ॥ घृतस्तानं ॥ क्रीं श्रीं च
वापूगविनाकनसिंगपूते विनाकिनी ॥ अग्निमर्षस्वयं रंगप्रिभा
ऊनकं डिवं ॥ क्रीं श्रीं रंगदण्डादिः ॐ द्यधृतंस्तानं नमः ॥ ॥ म
धुस्तानं ॥ क्रीं श्रीं रंगमूर्खी

अमृतमन्त्रानं ॥ जै क्रीं श्रीं अमृतं पंचपिठितं ॥ शिवशक्तिस्वरूपिणा ॥ मनुसि
द्धिरुलं दहि सुधास्तानं करोम्यहं ॥ जै ३ रंगवत्पत्त्यादिः ॐ द्यसनास्तानं
॥ शुद्धजलस्तानं ॥ जै ३ मद्धहपापमलिनं ॥ क्षालिगंथनकर्म ॥ रत्ना

स्नानं कनिष्ठा मिथुन सीरा जलन च ॥ नै ३ रगवत्प्रादि ०० दं ०० दं ००
 ल स्नानं नमः ॥ ॥ मधूपर्क ॥ नै ३ मधूमदिक संयुक्तं सर्षिषा पय मिथु
 नं ॥ समपर्व गृह न दं मया रुतं निवदिताम् ॥ नै ३ रगवत्प्रादि ००
 दं मधूपर्क नमः ॥ ॥ चन्दनं ॥ नै ३ श्रीखन्दकं कर्मयुक्तं कर्पू नमः ग
 नाभि ॐ ॥ ----- दधमिः गृहाक्षमनूलपनं ॥ नै ३ रगवत्प्रादि म
 नुं ०० दं चन्दनं नमः ॥ सिद्धनं ॥ नै ३ वीप्रध्वनी महावीन वीन रस

समन्विता ॥ योलाक्का कर्षधी देवी सिन्दूना नूद्य मूर्ध्नी ॥ नै ३ रगव
 त्प्रादि मनुं सिन्दू नन्नमः ॥ वसुं ॥ नै ३ वसुं पवित्रं पनमं सुख
 रक्षी रगदायकं ॥ कर्पा सिक्ता उगता न वसुं गृह न मा मनु ॥ ००
 दं वसुं नै ३ रगवत्प्रादि मनुं नमः ॥ ॥ यक्षा पवीतं ॥ नै ३ य
 क्षा पवीतं दधमिः वृक्षगं ठि समन्विता ॥ गृहाक्ष नवतनुं च वृक्ष
 क्षा निर्मितं पूना ॥ नै ३ रगवत्प्रादि मनुं ०० दं यक्षा पवीतं नमः ॥

दृष्टि॥ त्रैलोक्यमर्थकपातालचतुर्दशप्रदर्शकं॥ दिव्यचक्र
लाश्रयार्थं दृष्टिकंप्रतिगच्छतां॥ त्रैलोक्यगवयस्यादिमनुं षड्दं
ष्टिकं गुणनमः॥ ॥ कर्णपताका॥ पंचध्वजा॥ कर्णध्वजयुगलंद
वीपताकापंचवर्णकं॥ पंचसिद्धिरुलाश्रयार्थं गृहानध्वजमूक
म॥ त्रैलोक्यगवयस्यादिमनुं कर्णपताकाध्वजनमः॥ इवापूष्यं
॥ त्रैलोक्यद्वारासुरांश्चानिःलक्ष्मीरुज्जयप्रदां सिद्धिदमृद्धिद

मागः गृहाक्षजगदं विक॥ श्रीं श्रीं गवयप्रतिमनुं षड्दं दूर्वाद्वारां
॥ ॥ मालापूष्यं॥ त्रैलोक्यनानापूष्यसुरांश्चानिःमालायाविविधानि
च॥ दिव्यदक्षिणचक्रं मयारुक्मनिवदिरं॥ त्रैलोक्यगवयस्यादि
मनुं षड्दं मालापूष्यं नमः॥ ॥ गतागयतीमनुं पूजयतां त्रैलोक्यं
सिद्धिलक्ष्मीविग्रहं नवव्याधिकधीमही॥ तन्नालक्ष्मीप्रदायतां
॥ ॥ मूलमालामनुं सप्तवानपूजयतां मूलमनुं दत्तयां जति॥

गंगाधवागुवलिं स्थापय ॥ पवित्राभयपृथक्पृथक् ॥ ॥ यथा
 वामस्वदक्षिणयोरगककुलं साधय ॥ गणकम ॥ गणककुलगहनपा
 अपंचपिर्धुविलिख ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ दीपापनिष्ठापय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ दि
 पूनाथ सर्वमन्त्रासनाय नमः ॥ षडक्षनसंपूज्या गायत्री ॥ खुं सिद्धि
 लक्ष्मीविग्रहति ॥ गंगावलिं प्रतिविधिरमाधरुन्नुमांसं सूना दिक्
 दागवां ॥ ॐ ॐ ॐ सर्वजनादि ॥ ॥ गंगामधुलपवित्रानपूजय ॥

॥ गंगामूलस्वामिनी पूजनार्थं आरूपा प्रार्थयित्वा पवित्रानपूजय ॥
 मूलं श्रीप्रत्यंगिना सिद्धिलक्ष्मीयथा पवित्रानपूजनार्थं आरूपा देहि क
 मस्व ॥ ॥ गंगाक्रम ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ कूलगक्षपतिनाथ श्रीपादकां पूजया
 मिनमः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ कमगक्षपतिवत्सला भूम्वा श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ कमव
 दकनाथ श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ कमवदकवत्सला भूम्वा श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ कानपी ॐ श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ हृदसंकम श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ स
 र्वसंज्ञानिधी भूम्वा श्रीपापू गर्प्य ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ महाकनवीन भूम्वा नाथ श्रीपा

पूः तर्प्य॥ नै३ सर्वसहानवलालकटद्वयपालक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ रत्नलला
अम्बाक्षीपापूः तर्प्य॥ ॥ गतावीथ्याख्या॥ गुनक्रमा॥ नै३ कीर्त्तिवीननाथक्षी
पापूः तर्प्य॥ नै३ दशकन्दनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ क्रोधमूनिनाथक्षीपापूः
तर्प्य॥ नै३ वशिष्ठनाथपापूः तर्प्य॥ नै३ दिव्योद्य॥ नै३ कंकालताम्बी
अम्बाक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ मातंगीअम्बाक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ वीनवलीता
म्विनीअम्बापापूः तर्प्य॥ नै३ त्रिशुवनानन्दनाथपापूः तर्प्य॥ नै३
नै३ जयप्रथनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ ॥ ३

विजयानाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ वामदेवनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ ग
र्हनन्दनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ हरद्वारगोत्रनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३
तन्मिहोद्य॥ ॥ अनननमानवोद्य॥ नै३ पद्मानन्दनाथक्षीपापूः
तर्प्य॥ नै३ ॐ कानन्दनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ अजवकुनन्दनाथक्षी
पापूः तर्प्य॥ नै३ विन्दनन्दनाथक्षीपापूः तर्प्य॥ नै३ श्रीधनन्दनाथक्षी
पापूः तर्प्य॥ ॥ ॐ गिगुनक्रमं कसुमाक्षनपूजय॥ नै३ ॐ हनुक

रुपालायनमः श्रीपापूतर्पयामिनमः॥ नै३ ह्रीं रिपूनाकवदिरुपा
लायनमः श्रीपापूतर्प॥ नै३ वदिवतालायनमः श्रीपापू॥ तर्प॥ नै३
अग्निजिह्वाकरुपालायनमः श्रीपापूतर्प॥ नै३ कंकालकरुपाला
यनमः श्रीपापूतर्प॥ नै३ कलालकरुपालायनमः श्रीपापूतर्प
॥ नै३ कपालकरुपालायनमः श्रीपापूतर्पयामिनमः॥ नै३ ३८
कपादकरुपालायनमः श्रीपापूतर्प॥ ॐ नमो हरुपालसंपू

मू३॥ ॥ नै३ लै३ ॐ नमो यपापूतर्प॥ नव० नै३ अगतय॥ मू३ यमाय॥
ह्रीं नै३ अत्प॥ वू३ वनूक्षाय॥ यू३ वायव॥ ह्रीं वनूनाय॥ ह्रीं ॐ ॐ नाराय॥
ॐ अ॥ अनकाय॥ उ३ उ३ वद्व॥ ॥ ॐ नमो हरुपालसंपूजा
॥ ॥ ततः शिवरूप॥ नै३ दिव्योद्यायपापूतर्प॥ नव० सिद्धोद्य॥ मा
नवोद्य॥ शकलि॥ ॥ अष्टरूप॥ नै३ ३३ महकममवहिनीनोद
मू३ वजां ॐ ॐ ॐ काकमूखी श्रीपापूतर्प॥ नै३ ३३ वी३ श्रीवधुमू

स्वायवीशीपापूः **तर्प** ॥ नै ३ खुं दं श्रीगन्कालीशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं रं श्री
तापिनीशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं पूं श्रीपावकीद्वीशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं
शैः यमघ भद्वीशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं मे श्रीशिवाद्वीशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं
श्रीपापूः **तर्प** ॥ नै ३ खुं दः दयंकनीशीपापूः **तर्प** ॥ ॐ यष्टलपूर्वा
दानयच ॐ क्षानाके नृपुत्र ॥ ॥ ततः पशुनमस्त्वपुत्र ॥
नै ३ खुं कनकिनी भूम्वाशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं काधिनी भूम्वाशीपा

पूत ॥ नै ३ खुं संकर्षिणी भूम्वाशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं खचनी भूम्वाशीपा
पूत ॥ नै ३ खुं ललीहानाम्वाशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं रेनवी भूम्वाशी
पापूः **ता** ॥ नै ३ खुं पशुना ॥ ॥ द्वादशदला ॥ पूर्वको नादिदला ॥ नै ३
श्रीखुं वगवती भूम्वाशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं द्वाद्वी भूम्वापाः **ता** ॥ नै ३
खुं खिखनी भूम्वाशीपापूः **ता** ॥ नै ३ खुं विगली भूम्वाशीपापूः
॥ नै ३ खुं यमकिनाम्वाशीपापूः **तर्प** ॥ नै ३ खुं नृपुत्र ॥

मवापापूना॥ जें ३ खुं चटादनी जून्वाळी पापूना॥ जें ३ खुं वोनमाता जून्वा
 छी पापूना॥ जें ३ खुं उत्तूकी जून्वाळी पापूना॥ जें ३ खुं कलं कि
 नी जून्वाळी पापूना॥ ॥ पशु किनी॥ जें ३ मां जंज किनी जून्वाळी पा
 पूना॥ जें ३ मां वा किनी जून्वाळी पापूना॥ जें ३ मां लां ला किनी
 जून्वाळी पापूना॥ जें ३ मां कां का किनी जून्वाळी पापू
 ना॥ जें ३ मां सां सा किनी जून्वाळी पापूना॥ जें ३ मां हां हा किनी

अम्बाश्रीपापुता॥ वृत्तिअकिनी॥ ॥ अष्टदशपूर्वादिपूजय ॥
 नैकीं श्रीं कुंक्षीं अंबा १५ प्रयाग आख्यायी मन्त्रलावेष्टावक्रा
 क्षीं नैकीं अंबाः असितांग ऐनवश्रीपादकल्याणमः ॥ गणेश ॥ नैकीं
 क १ वनक्ष्मा वृत्ती लायी चर्चिका सुन्दरी माहेश्वरी आरगनयी वृद्धः
 ननरे नवश्रीपापुता॥ नैकीं व १ कोलापूनड हायी आगभयी कवनी को
 मानी याम्ये दुद्धः चक्षुरे नवश्रीपादकल्याणमः पूजया मिः तर्प ॥ नैकीं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हनसिद्धायी खटकी वैष्णवी नमः ॥ दः
क्रोध रैनवलीपाः पूजः नमः ॥ जै नमः जयनिकट आयी कंधूकी वा
नाहि वानुलीहः दः उन्मत्त रैनवलीपा पू नमः ॥ जै नमः पं ज च नित्तु
लायी किल किल उकी माहन्ती वा यवः दः कपाली रैनवली
पा पू नमः ॥ जै नमः यं ४ न काम के उं हायी कालनाती पिनि चाम
हू कोवनी उः दः रीषस रैनवली पा पू नमः ॥ जै नमः ४ दवी का

[illegible]

कं॥पूर्व॥नेंकींशीखुंवनदनाथशीपाःता॥नेंकींशीखुंअरयनाथ
शीपापूःता॥आरुनेथा॥॥याम्प॥नेंकींशीखुंकेलक्षनाथशी
पापूःता॥निमम्प॥नेंकींशीखुंखदासनाथशीपापूःता॥पब्धि
भा॥नेंकींशीखुंमन्दनाथशीपापूःता॥वायो॥नेंकींशीखुंनिष्
लनाथशीपाःता॥सोम्प॥नेंकींशीखुंअंकुषनाथशीपाःता॥
होमीमान॥नेंकींशीखुंखदनाथशीपाःता॥उड्ड॥नेंकींशीखुं

कपालनाथशीपापूःता॥अधः॥नेंकींशीखुंपाषाणाथशीपापूःता॥नवं
स्वामुदककंसंपूअ॥०॥तमात्रिकारक्षा॥ॐकींवगलामुखीसर्व
पुष्टानां॥॥वाचंमुखंपदंस्तरयजिह्वांकीलयवृद्धिंविनाश
यकींॐस्वाहा॥शीवगलायेपापूःतर्प्य॥वलि॥॥ॐकींनाअप्रद
कुंउग्रचक्षुनिपूमर्दनीहूँहूँसदानकरत्वांमांशंसुःसुहृन्मन
मःस्वाहापापूःता॥वलि॥॥नेंशीकींहूँनेंवडविलावनीथ

[illegible]

दूकां:ता॥वर्षु॥२०॥मिनप्रि३॥॥ज्रांरिंरौमहासृष्टिचन्दल
कीसिद्धुधनिरुदृपा:ता॥वर्षु॥११॥मिनप्रि३॥॥ज्रैकींशीं
रुंरुदृरुदृरुदृस्वाहाशीपा:ता॥वर्षु॥२॥मिनप्रि३॥॥खुंनमा
गवगीसिद्धिलकीधनीरुदृरुदृस्वाहा॥शीपाइकां:ता॥वर्षु
११॥मिनप्रि३॥॥नैपंचमर्तु:पंचवकुंसंपूअ॥॥मयत्पादक्षध
संपूअ॥खुंसिद्धिलकीविमह:नवत्पाधिकधीमहि॥नेन्नाल

श्रीप्रवादयान् ॥ ॥ गतामूलनवाहनभययांजलि संपूज्य ॥ ३ ॥
 गतादरानाप्रिसेगादर्यापंचधामूलस्वामिनीः पूज्य ॥ ॐ नमः
 सर्वसिद्धियागिनीथानमः सर्वमारकथानभानिषादितानन्दनन्दि
 गार्थसकलकूलचक्रनायिकाथैरगवर्षेचन्द्रकापालिभ्यै नमः
 ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः खुं पनमहं सिनिनिर्वीक्षमार्गदविषभा
 पप्रवप्रसेमनिसकलदुनिगानिष्टकृष्णदलनी सर्वापदांशधि

स्वर

गनधिसकलक्षग्रुप्रमथनीद्वीजागच्छ २ हसरवला २ नननूधिनानुव
 सारदनीममंभग्रुमर्दमर्दखाहिरिगुल्लेनरिन्दि २ वृन्दि २ खद
 नगाडय २ कंदय २ गावशावत्सकलमनीनथात्साधय २ पनमका
 नूभिकरगवतिमहाएनवंरूपधनिधीप्रिदधवननमिगः सकलम
 क्रुमारः प्रनगजनवत्सलद्वीमहाकालिकालनाभिनी ह्रीं ३ प्रसीद
 मनागुनांकुत् २ सुनासूनकन्यकां श्रीं ह्रीं रुद्र ३ स्वाहा ॥ श्रीप्रत्यंगि

ॐ २

नासिद्धिलक्ष्मीदवीशीपापूः नर्प्या॥ वलिरथाननु॥ आनिमूद्रां दर्शय ॥
जेकीं श्रीं कुं सुं खूं रूं नृणाः गुफतनप्रकटतनायागिनीशीरेन
वक्रगुपा ॐ ले गधवदूकादयश्मश्मववासिनो सर्वसर्वाश्म
पूनकशीसिद्धिचक्रममूद्राः ससिद्धयः सायूधः सवाहनाः सपनि
वानयूताः सोपवानेः पूजितामनु ईं रूट् स्वाहा॥ प्रापूः नर्प्या॥ वि
वानंपूष्या॥ ॥ गताधूप॥ रूट् मनुक्षसामान्यार्घ्यकलनप्रोदः नमः

चन्दनादिभिः पूजयगा रक्षाधनं॥ यं ३ नं ३ वं ३॥ मूलं ३॥ धनमाला
३ क्कानिका ४॥ कीं श्रीं वनस्पतिन रक्षात्पत्तागन्धगंध उरुमः आ
र्घ्यः सर्वदेवानां धूपायं प्रतिगृह्यतां॥ कीं श्रीं प्रत्यंगिनासिद्धिल
क्ष्मीदवीसांगये सपनिवानायै सवाहनायै सायूधायै वृंदधूपं
निवदयामिनमः॥ नीचधूपय ॥ ॥ दीपं॥ दीपराहुं ईं रूट्
वृं नि रक्षाया ॥ धूपवता रक्षाधनं॥ कीं श्रीं खूं सुप्रकाशमहागजः

सर्वतुमिनिनापहः॥सराकारेननंअतिदीपायंप्रतिगच्छतां॥कींभी
दुःखीप्रसंगिनानिनिर्व्ववत्॥ॐमंदीपनिवदयामिनमः॥उच्चैर्दी
पंदत्वा॥प्रथमबद्धपूजा॥ॐकींभीॐउगर्धनिमनुमागस्वाहा
॥धूपथना॥नेवशं॥कींभीयथविरवपक्वानपायसादिमधूनडव
नि॥अर्घउल्लनप्रादः॥हं॥ॐ॥वोषट्॥अवलोक्या॥हं॥अवगु
ल्लनं॥नमःपूजय॥कींभीखेपशुहं॥ॐ॥वक्रमूडयासनद
॥यं३॥ॐ॥नं॥नं३दाहनं॥व३॥ॐ॥नमः॥अमनीकनक्षं॥मृ

लनपूर्व्वधुः॥स्वा॥यां४॥नो४॥लो४॥वां४॥नरादिकनसं॥ॐ॥न
वादनक्षवानुयारिसन्तु॥ॐ॥संदीप्य॥कींभीखे॥अनं॥वतु
विधं॥वेव॥नसः॥प्रहिसमत्तितं॥मयानिवदितंतुयं॥गच्छतांपन
मठवनी॥कींभीखे॥ॐ॥ॐ॥कींभीप्रसंगिनानिनिर्व्ववत्॥ॐ॥मंदीपनिवदयामिनमः॥उच्चैर्दी
पंदत्वा॥कींभीखे॥ॐ॥ॐ॥उगर्धनिमनुमागस्वाहा
॥धूपथना॥नेवशं॥कींभीयथविरवपक्वानपायसादिमधूनडव
नि॥अर्घउल्लनप्रादः॥हं॥ॐ॥वोषट्॥अवलोक्या॥हं॥अवगु
ल्लनं॥नमःपूजय॥कींभीखेपशुहं॥ॐ॥वक्रमूडयासनद
॥यं३॥ॐ॥नं॥नं३दाहनं॥व३॥ॐ॥नमः॥अमनीकनक्षं॥मृ

मांगुष्टेः॥ ३४ श्रीसिद्धिलक्ष्मीदेव्यै ज्ञानाय स्वाहा॥ अनामिका मध्य मांगु
 ष्टेः॥ ३४ श्रीमहाचन्द्रकापालिनी देव्या नानाय स्वाहा॥ अनामिका तर्जनी
 मध्य मांगुष्टेः॥ ३४ श्रीमहाप्रसंगिना देव्यै उदानाय स्वाहा॥ कनिष्ठा
 तर्जनी मध्य मानामिकांगुष्टेः॥ ३४ श्रीमहासिद्धिलक्ष्मीदेव्यै समानाय स्वा
 हा॥ अमृता सूनक्ष्मसि स्वाहा॥ श्रीप्राणामृततवलि स॥ ॥ गपनो
 क्रीं श्रीं खुं आत्मतत्वाधिपति श्रीमहासिद्धिलक्ष्मीं रूपं नु॥ क्रीं श्रीं

खुं विद्यातत्वाधिपति श्रीमहाचक्षुकापालिनी देव्यै रूपं नु॥ क्रीं
 श्रीं शिवतत्वाधिपति श्रीमहाप्रसंगिना देव्यै रूपं नु॥ क्रीं श्रीं
 खुं श्रीं खुं सर्वतत्वाधिपति श्रीमहासिद्धिलक्ष्मीदेव्यै रूपं नु
 ॥ अ ५० न्यने वंशं॥ देवीपति वानथा स्वाहा॥ आचमनं॥ पून
 नाचमनीयं वं॥ ॥ रुलादि॥ कदलीवीजपूतं च नागनंगक्षुदि
 संतथा॥ मयानिवदितं तु खं गृहाक्षपनमध्वनी॥ ॥ गाम्बूलं॥ पूगीरु

लंतागलंकर्पूनादिसमायुतं॥ त्रलालवंगसंयुक्तं॥ ताम्बूलप्रतिगृह
तां॥ पूर्ववत्संयुतं॥ ॥ प्रहृष्टनिर्मलहसप्रसन्नसदृशं मूकसूक्ष्मपूजितं॥
आतीप्रयत्नलवंगपूजसकलैः कर्पूनापूजान्वितं॥ ताम्बूलविनिव
दितां पूजहन्प्राप्तसिगुण्यमया॥ चक्राङ्गादकनं वहानवदशीसिद्धि
लक्ष्मीनमः॥ ताम्बूलमंत्रः॥ ॥ ततोवलि॥ चन्द्रनादिता॥ जूनामिका
मुष्टयाः॥ खुंमहानूडामनायनमः॥ नैकींशींकांकींईकींकींः

महानूडामनायनमः॥ नैकींशींकांमहानूडामनायममसर्वविद्या
नासय२ममसकलमनानथान्साधय२००मांजुलिपललतादनपू
जायथा॥ किंवलिङ्गुक्त२ईरुदस्वाहा॥ सिद्धधनयातं॥ नैकींशींखुं
महाप्रतामनायममसर्वविद्युतिपूर्ववत्॥ मालामन्त्रवलि॥ ॥
ततोपूजाक्रमक्षयवचनवलि॥ ० ॥ ततोसमयविद्या॥ कींशींवे
कथाराधनीचन्द्रपीठव्यामकालिमातंगिनीरीमकालीकाम

त्रपिथीसिद्धकालिपूषुगिनिवर्धुकालिजालंधनीचक्षुकालिअति
यासिनककालिसर्वसमयलारंकनरससिद्धसुप्रसनरशीप्रसन
प्रसनहेसंखःखःखःहिरकीकूंवाहि२काहि२खाहिखेंकूंलौखौ
खौलौकूंहौवांकींशींहूंमोहूंहूंहूंहूं॥नैनिप्रएगवनीहूं
सिद्धिलक्ष्मीधनीकांकींहूंहूंखूंमहाचक्षुआरगधनीहूंकां
कींशींपनमहसिनीसिद्धिसिद्धिप्रदकीसर्वसमयलारंक

नरमहाभलापकानिधीशींहूंनाथशीप्रसनरसुप्रसन्नारवॐ
नमःसर्वसिद्धियागिनीस्थानमः॥२५॥समयविद्या॥॥जेकीं
शींहूंकांएगवनीसिद्धिलक्ष्मीमहामातरखूंविपनीराचानन
नप॥नपनापनहूंमहाचक्षुआरगधनीनिद्धिसिद्धि
प्रदहूंविपददल॥नीकींहूंधननाअदहिरसुप्रसन
सुप्रसनममसिद्धिदहिरकींहूंहूंॐ३पनमहसिनीकांमहाया

लिविद्या ॥ नमो लक्ष्मीवल्लि ॥ नमो लक्ष्मीन गायत्रीन विष्णुसंप्रभ
॥ आवनक्षानां वलिप्रदानं ॥ विन्दुचन्द्रनादिरि पूज्या ॥ नैऋतीं श्रीं कु
सगक्षपतिनाथादिपूजाक्रमनवल्लिंदया ॥ पातु सुदयन ॥ नै
कीं श्रीं वृं कूलपूतवदकनाथकपिलपिंगलज्जयरां नराह
विन ॥ शुं गृहानामुखस्ववल्लरासहितममसर्वविद्यानास
य २ सकं लमनां नथासाधय २ ०० मां सर्वापि चानवल्लिं गृह

गृहं ईश्वरस्वाहा ॥ वदकवल्लि ॥ नैऋतीं कुं कमगक्षपतिनाथस्वव
ल्लरासहितसर्वजनं मवसमानय ॥ शुं २ सर्वविद्यानां य २ स
र्वोपचरिः सहवल्लिं गृहं ईश्वरस्वाहा ॥ नैऋतीं कुं ईश्वरस्थान
द्वगृपालमहादेवममसर्वविद्यानासय २ शुं सर्वापि चान
वल्लिं गृहं २ स्वाहा ॥ नैऋतीं कुं ईश्वरान्नासनमहाव लोत्कट
नृपायवल्लरासहिताय ०० मां सर्वापि चानसहितवल्लिं गृहं २

ममसकलमनानथानसाधय २ सिद्धिदहि नद २ हूं रूट् स्वा
 हा ॥ जें ३ मूं सेंः सर्वथा योगिनी था वलिंग २ हूं रूट् स्वाहा ॥ जें ३
 धूं सिद्धि २ वामरूट् वलिंग २ हूं रूट् स्वाहा ॥ ॥ जें ३ अं के वं
 २ तं पं यं ॥ हं हं गु कादि अरु दं गु पा लाय वलिंग २ हूं रू
 ट् स्वाहा ॥ जें ३ अं अं १ ६ भूं प्रयाग दं गु अ सिता २ हं रू वं अं अं
 दा ष्ठी काम नृ प पी ० सर्व २ मंगला वं भा वं का ष्ठी देवी ममस

वं विद्यानाथ य २ सकलमनानथात्साधय २ हूं मां अं नि प ल ल उ
 द न पू जा व लिंग २ हूं रूट् स्वाहा ॥ जें ३ प्र का न ह स र्व गु द यो ॥
 जें ३ अं वा ना स सां ष्ठी नृ नृ रू वं ष्ठी ला ष्ठी व स की सो सि नि मा ह ष्ठी
 देवी २ समादि पूर्व व ॥ जें ३ वं ३ चूं को ला पू न दं गु उं वं रू रू न
 वं उ ह ॥ अं क व र्दि नी था ग पी ० को वं मा नी दे वी म मा दि पूर्व व
 ॥ जें ३ अं अं ह हा स दं गु अ नृ द का ध २ रू न व स रू सा ष्ठी ह न सि द्ध

वाः सुदृक् धीवाः चटादनीर्जवाः चोत्रमाता जम्बाः उन्मुकी जम्बाः
कनं किनी जम्बा ॥ १२ ॥ ॥ जे ३ खुं महाकमलचहिनी नोड मूरवी
होँ होँ होँ क मूरवी दवी वृं माः बलि गृह २ हें रुद्र १॥ ॥ एवं गुं ताका
नी दवीः गुं तापिनी दवीः पू पावकि येः यमघंटाः मो शिवा दूतीः दंः
जयंकनी ॥ ॥ जे ५ होँ खुं कनं किनी दवी वलि गृह २ मम सिद्धि देहि
२ हें रुद्र १॥ ॥ एवं क्रोध नी दवीः संकर्षणी दवीः ललिहानाः खे
वनीः ऐनवीः वृक्षकिः विष्णु भक्तिः नृक्षकिः संखिनी दवीः शिवा

दूगि दवी ॥ ॥ जे ३ खुं सर्वरूपादि हृदय शक्ति रयां षड राखा वलि गृह २
हें रुद्र १॥ ॥ जे ३ खुं वनदनाथः अरयनाथः कलसनाथः खडनाथः
मधुनाथः प्रियलनाथः अक्षुण्णनाथः खडंगनाथः कपालनाथः पाण
नाथः स्वा मुदहा कला वलि गृह २ हें रुद्र १॥ ॥ जे ३ खुं प्रश्न मत्वा
त्मक प्रताय वलि गृह २ हें रुद्र १॥ ॥ जे ५ माँ आनन्द ऐन वरूपाय
सिद्धि नाय वलि गृह २ हें रुद्र १॥ ॥ जे ५ माँ महावन्द्य ग असं कर्षणी
कानि नक्त न ह वलि गृह २ हें रुद्र १॥ ॥ जे ५ माँ धूर्ति जाँ